फरीदाबाद

मजदूर समाचार

राहें तलाशने-बनाने के लिए मजदूरों के अनुभवों व विचारों के आदान-प्रदान के जरियों में एक जरिया

नई सीरीज नम्बर 210 दिसम्बर 2005

कहत कबीर

मण्डी- मुद्रा का दबदबा
लाभ- हानि, नफा- नुकसान,
"क्या फायदा?" के संकीर्ण दायरे में
जीवन को
अधिकाधिक सिकोड़ रहा है।

दिल्ली के संग अमरीका में मजदूरों के गत्ते (2)

✱ समस्यायें इतनी बढ गई हैं और स्वयं को इतना कमजोर पाते हैं कि अक्सर चमत्कार में ही आस नजर आती है। मत्था टेकने में हम ने किसी प्रकार की कमी नहीं छोड़ी है। सब शक्तियों के चमत्कारों के बावजूद हमारी समस्यायें बढती ही जा रही हैं।

✱ परेशानियाँ इस क़दर बढ गई हैं कि हमें तत्काल समाधान चाहियें। इन्तजार अपने बस से बाहर लगता है। चुटकी बजा कर परेशानी दूर करने वालों को ढूँढने में हम ने किसी प्रकार की कमी नहीं छोड़ी है। अनेकानेक मसीहाओं को आजमाने में हम ने कोई कँजूसी नहीं बरती है। नेताओं- पार्टियों- दादाओं- सिद्धों की चुटकियों और गर्जन को हम ने हमारी परेशानियाँ बढाने वाली ही पाया है।

क्या करें ? कहाँ जायें ? हताशा- निराशा में अपने- अपने में सिमटते हैं और समस्याओं- परेशानियों को बढते पाते हैं। मन नहीं करता, मस्तिष्क मना करता है फिर भी मजार और मसीहा के फेरे लगाना ही अक्सर नजर आता है। इस चक्रव्यूह में एक दरार डालने का प्रयास लगता है **माइकल आराम एक्सपोर्ट मजदूरों** द्वारा दिल्ली में गत्ते ले कर अन्य मजदूरों के बीच जाना, आम लोगों के बीच खड़े होना। सौ मजदूरों को प्रतिनिधियों/नेताओं के जरिये पाँच में बदल कर मुट्ठी में रखने की परिपाटी को चुनौती है 10 का 100- 1000- 10,000- ..... बनने की राह।

दिल्ली में मजदूरों के गत्तों की गमक- धमक अमरीका पहुँची है। दमन- शोषण वाली विश्वव्यापी वर्तमान समाज व्यवस्था से पार पाने तथा नई समाज रचना के प्रयासों के लिये एक और शुभ संकेत है यह।

हमें खुशी है कि इस महीने भी हम यहाँ मजदूरों के गत्तों की चर्चा कर रहे हैं।

● माइकल आराम एक्सपोर्ट, बी- 156 डी डी ए शैड्स ओखला फेज-I. के मजदूरों द्वारा 27 अक्टूबर को आरम्भ किया गया गत्ते ले कर दिल्ली में अन्य मजदूरों के बीच जाना, आम लोगों के बीच खड़े होना नवम्बर में भी जारी रहा।

मार्च 05 से कम्पनी द्वारा काम देना बन्द कर फैक्ट्री में खाली बैठाना, मई में नई फैक्ट्री खोल वहाँ वही काम करवाना, अन्य स्थानों से उत्पादन करवाना, तनखा में टालमटोल के बाद सितम्बर माह का वेतन देना ही नहीं, दबाव बढा कर गाजियाबाद और सी- 82 ओखला फेज-I स्थित माइकल आराम एक्सपोर्ट फैक्ट्रियों के मजदूरों से इस्तीफे लिखवाना, अमरीका स्थित माइकल आराम ग्रुप की कम्पनी को माल का निर्यात जारी रखना,....

● स्थाई मजदूरों की जगह कैजुअल वरकर रखने, ठेकेदारों के जरिये मजदूर रखने के लिये उपरोक्त जैसी हरकतें कम्पनियों की सामान्य क्रियायें हैं। स्थाई मजदूर की आधी, चौथाई, छठवें हिस्से की तनखा में उतना ही उत्पादन करवाना (बल्कि अधिक उत्पादन करवाना) यहाँ 15- 20 वर्ष से सरकारों- कम्पनियों के क्रियाकलापों की मुख्य चारित्रिकता है। निगाहों को संसार के पटल पर रखें तो उत्पादन के संग लेखाजोखा व वितरण के कार्य को अमरीका- यूरोप से निकल कर दुनियाँ के अन्य क्षेत्रों में तीव्रतर गति से जाते पाते हैं। मैक्सिको- चीन- भारत- बंगलादेश- ..... का अर्थ है यूरोप- अमरीका में वेतन के दसवें, बीसवें, तीसवें, चालीसवें हिस्से में कार्य करवाना।

भाप- कोयला आधारित मशीनों द्वारा स्थापित मजदूर लगा कर मण्डी के लिये उत्पादन वाली वर्तमान समाज व्यवस्था की मारक क्षमता को बिजली और इलेक्ट्रोनिक्स ने सातवें आसमान पर पहुँचा दिया है। कृत्रिम उपग्रह- कम्प्युटर- इन्टरनेट ने सिर- माथों पर बैठों के लिये यूरोप- अमरीका में उत्पादन कार्य कम कर भयभीत मजदूरों को जकड़ में कसने का कार्य किया है तथा भारत- चीन में दस्तकारों- किसानों की सामाजिक मौत की रफ्तार बढा कर टके सेर इन्सान उपलब्ध होना सुनिश्चित किया है। बेरोजगारों की भरमार (अमरीका सरकार की जेलों में बीस लाख से ज्यादा लोग बन्द), भारत में सरकारों द्वारा निर्धारित न्यूनतम वेतन के आधे से भी कम में काम करने के लिये कतारें. ... जैसे ज्ञान को ऊँच- नीच वाली समाज व्यवस्थाओं का वाहक वाहन कह सकते हैं वैसे ही विज्ञान को मण्डी- मुद्रा का वाहक वाहन कहा जा सकता है (देवताओं के वाहक वाहन बहुत पीछे छूट गये हैं)।

● माइकल आराम एक्सपोर्ट के मजदूरों ने इन हालात में गत्ते ले कर ओखला औद्योगिक क्षेत्र में सड़कों के किनारे खड़े होना शुरू किया। झिझकें तो थी ही, प्रभाव के बारे में शक- शंका की भरमार भी थी।

– ड्युटी पहुँचने की भागमभाग में ओखला में विभिन्न कम्पनियों के मजदूरों का गत्ते थामे मजदूरों के पास बड़ी सँख्या में खड़े होने और बातें करने ने झिझकें तेजी से कम की। लेकिन माइकल आराम एक्सपोर्ट/ माइकल आराम डिजाइन के अधिकारियों द्वारा बेपरवाही के प्रदर्शन ने प्रभाव के बारे में शंका को बनाये रखा।

– ओखला औद्योगिक क्षेत्र से बाहर कनॉट प्लेस, नेहरू प्लेस, आई.टी.ओ. आदि स्थानों पर गत्ते थामे मजदूरों के पास कम लोग खड़े हुये और यह जगहें माइकल आराम एक्सपोर्ट मजदूरों को अटपटी भी लगी। गत्ते थामे एक- दूसरे से दस- दस कदम दूर शान्त- चुप खड़े मजदूर कोई कानून नहीं तोड़ रहे थे पर फिर भी पुलिस की पहली प्रतिक्रिया हटाने- भगाने की रही – चन्द सहयोगियों के जरिये ही पुलिस से पार पाया जा सका।

– इधर माइकल आराम एक्सपोर्ट मजदूरों के सम्मुख "और क्या- क्या कर सकते हैं?" का प्रश्न था और उधर अमरीका में इन गत्ते थामे मजदूरों की गमक- धमक पहुँची, गूँजने लगी। माइकल आराम ग्रुप की अमरीका स्थित कम्पनी से दिल्ली में ग्रुप की फैक्ट्री के मजदूरों के साथ किये जा रहे व्यवहार के बारे में लोग सवाल पूछने लगे। माइकल आराम ग्रुप का उत्पादन बेचते स्टोरों से प्रश्न पूछे जाने लगे.... ज्ञान- विज्ञान का यह उपयोग, ऊँच- नीच/मण्डी- मुद्रा के वाहक वाहन के करोड़वें- अरबवें हिस्से का ऐसा इस्तेमाल ज्ञान- विज्ञान को एकमुश्त नकारने- ठुकराने की बजाय ज्ञान- विज्ञान की आलोचनात्मक समीक्षा के लिये आधार प्रदान करता लगता है।

– सुबह सड़कों के किनारे गत्तों के साथ खड़े होते मजदूर भोजन अवकाश के समय ग्रुप की सी- 109 ओखला फेज-I स्थित नई फैक्ट्री के सामने खड़े होते थे। समय बढा कर वहाँ तथा कम्पनी के पंजीकृत कार्यालय पर क्रमवार चार- चार घण्टे रहने का तय किया। 23- 24 नवम्बर को गत्ते लिये (**बाकी पेज तीन पर**)

कानून हैं शोषण के लिये
छूट है कानून से परे शोषण की

हरियाणा सरकार द्वारा निर्धारित कम से कम तनखा अकुशल मजदूर- हैल्पर के लिये 8 घण्टे की ड्युटी और महीने में 4 छुट्टी पर जुलाई 05 से 2360 रुपये है।

महादेव टैक्निकल मजदूर : "प्लॉट 117 संजय मैमोरियल इन्डस्ट्रीयल एस्टेट स्थित फैक्ट्री में हैल्पर की तनखा 1500 रुपये – ई.एस. आई. नहीं, पी.एफ. नहीं। बफिंग व पावर प्रेस का काम – हाथ कटने पर नौकरी से निकाल देते हैं। ड्युटी सुबह 8½ से साँय 5 तक है पर रात 10- 12 बजे तक रोक लेते हैं – ओवर टाइम का भुगतान सिंगल रेट से। त्यौहारी छुट्टी नहीं और नौकरी छोड़ने पर किये काम के पैसे नहीं। सितम्बर का वेतन 30 अक्टूबर को दिया था, अक्टूबर की तनखा आज 12 नवम्बर तक नहीं।"

के. आर. रबराइट वरकर : " प्लॉट 37 डी सैक्टर- 6 स्थित फैक्ट्री में प्रेस शॉप, वैल्डिंग, पैकिंग विभागों में सुबह 8 से रात 10½ बजे तक की एक शिफ्ट है और टूल रूम में सुबह 8 से रात 8½ तक तथा रात 8½ से अगले रोज सुबह 7½ बजे तक की दो शिफ्ट हैं। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। फैक्ट्री में 250 मजदूर काम करते हैं पर ई.एस.आई. व पी.एफ. 20 के ही हैं – एक्सीडेन्ट होने पर पीछे की तारीख से ई.एस. आई. करवा देते हैं। हैल्पर की तनखा 1400 रुपये। मैनेजिंग डायरेक्टर 17 नवम्बर को रात 3½ बजे फैक्ट्री पहुँचा और तबीयत खराब होने के कारण लेटे एक मजदूर को गालियाँ दी, थप्पड़ मारा, 12 घण्टे के पैसे काट लिये।"

ए.के. टैक्नो मजदूर : "प्लॉट 209 सैक्टर- 24 स्थित फैक्ट्री में पी.एफ. राशि के तीन हिस्से (18 %) हम मजदूरों के वेतन में से काटते हैं और एक हिस्सा (6 %) कम्पनी देती है। ई.एस.आई. की पूरी राशि ही हमारी तनखा में से काटी जाती है। हर महीने तनखा में से 500 रुपये से ज्यादा ऐसे काट लेते हैं। फैक्ट्री में काम करते 70 मजदूरों में किसी को ई.एस.आई. कार्ड नहीं। फैक्ट्री में 12- 12 घण्टे की दो शिफ्ट – ओवर टाइम का भुगतान सिंगल रेट से। हैल्परों की तनखा 1500- 1600 और ऑपरेटरों की 2000- 2500 रुपये। अक्टूबर का वेतन आज 16 नवम्बर तक नहीं दिया है।"

निर्मल डाइंग वरकर : "प्लॉट 64 सैक्टर- 25 स्थित फैक्ट्री में 12- 12 घण्टे की दो शिफ्ट। हैल्पर को 12 घण्टे के 80 रुपये और कारीगर को 110- 115। साप्ताहिक छुट्टी नहीं, कोई छुट्टी नहीं। फैक्ट्री में काम करते 40- 45 मजदूरों में से 20- 25 की ई.एस.आई. व पी.एफ। सितम्बर का वेतन 22 अक्टूबर को जा कर दिया था, अक्टूबर की तनखा आज 10 नवम्बर तक नहीं।"

शिवालिक ग्लोबल मजदूर : " 12/6 मथुरा रोड़ स्थित फैक्ट्री में 12 घण्टे की ड्युटी है और रिलीवर के नहीं आने पर 36 घण्टे लगातार काम करना पड़ता है। ऐसी 36 घण्टे की ड्युटी कर रहा एक वरकर 13 नवम्बर को रात 7½ बजे जेटी मशीन के कास्टिक टैंक में गिर कर बुरी तरह जल गया। यहाँ के सर्वोदय अस्पताल से दिल्ली सफदरजंग अस्पताल भेज दिया गया। पता नहीं उसका क्या हाल है – कम्पनी उसे ठेकेदार का वरकर बता रही है। तनखा में देरी का सिलसिला जारी है – सितम्बर का वेतन 3 नवम्बर को जा कर दिया, अक्टूबर की तनखा आज 15 नवम्बर तक नहीं दी है।"

कैन्डोर पावर प्रोजेक्ट्स वरकर : "22 सैक्टर- 4 स्थित फैक्ट्री में सितम्बर और अक्टूबर की तनखायें आज 12 नवम्बर तक नहीं दी हैं। तनखा माँगने पर गेट बाहर की धमकी। ई.एस.आई. और पी.एफ. भर्ती के बाद पहले 6 महीने ही, बाद में नहीं। बरसों से काम कर रहों को वेतन वाउचर पर।"

जिन्दल किचन प्रोडक्ट्स मजदूर : "सरूरपुर रोड़ स्थित फैक्ट्री में 275 वरकर काम करते हैं पर ई.एस.आई. व पी.एफ. सिर्फ 22 के हैं। फैक्ट्री में 12 घण्टे की एक शिफ्ट है – ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। हैल्पर की तनखा 1200 और ऑपरेटरों की 1800- 2000 रुपये।"

फाइबर इन्टरनेशनल मजदूर : "प्लॉट 100 सैक्टर- 6 स्थित फैक्ट्री में 12- 12 घण्टे की दो शिफ्टों में 250 वरकर काम करते हैं पर अक्टूबर में जाँच के लिये आये ई.एस.आई. दल को फैक्ट्री बन्द बताई। कपड़े की ब्लीचिंग के बाद गन्दा पानी फैक्ट्री के बाहर बहा देते हैं। हैल्पर को 12 घण्टे रोज पर 30 दिन के दिये जाते 2200 को इधर 2500 रुपये कर दिया है। अक्टूबर की तनखा 18 नवम्बर को दी।"

एडमेक ऑटो इन्डस्ट्रीज वरकर : "प्लॉट 166 सैक्टर- 25 स्थित फैक्ट्री में काम करते 400 मजदूरों में से 100 की ही ई. एस.आई. व पी.एफ. हैं। फैक्ट्री में 12- 12 घण्टे की दो शिफ्ट हैं – ओवर टाइम का भुगतान सिंगल दर से। ठेकेदार के जरिये रखे हैल्पर की तनखा 1800 रुपये और कम्पनी द्वारा स्वयं भर्ती की 1800- 2100 रुपये। फैक्ट्री में 60- 70 पावर प्रेस हैं –2- 4 महीने में एक हाथ कट ही जाता है। हाथ कटने पर हल्की- फुल्की दवा करवा कर नौकरी से निकाल देते हैं।"

कॉन्टिनेन्टल टूल्स मजदूर : "प्लॉट 48 संजय मैमोरियल इन्डस्ट्रीयल एस्टेट फेज- 1 स्थित फैक्ट्री में शिफ्ट सुबह 8 बजे शुरू होती है पर रजिस्टर में 8½ से दर्ज करते हैं। छूटने का समय 6½ - 8½ बजे रात है। रोज 10½ - **(बाकी पेज तीन पर)**

ग्रेटर नोएडा...(पेज चार का शेष)

निकालने का मामला भी यूनियन ने श्रम विभाग मे उठाया – समझौता नहीं हुआ और डी एल सी ने 2003 के आरम्भ में इसे गाजियाबाद श्रम न्यायालय भेज दिया। नवम्बर 05 तक इस मामले की सुनवाई भी आरम्भ नहीं हुई – ढेरों बकाया केस, 2003 के अन्त में एक जज का स्थानान्तरण व उसके स्थान पर किसी को नहीं भेजना, 9 जून 05 को श्रम न्यायालय में बचे एकमात्र जज का भी तबादला, नवम्बर 05 में भी श्रम न्यायालय बिना किसी न्यायाधीश के । और, जेपी कम्पनी ने इलाहाबाद उच्च न्यायालय में डी एल सी द्वारा मामला श्रम न्यायालय भेजने के खिलाफ अर्जी भी दाखिल कर दी है।

अक्टूबर 02 में यूनियन ने बकाया तनखाओं और नौकरी पर बहाली के लिये उत्तर प्रदेश राज्य पिछड़ा वर्ग आयोग को भी आवदेन दिया था। कई प्रयासों के बाद आयोग को सरकारी विभागों से जानकारियाँ तीन साल में मिली। आयोग ने 7.4.05 को ग्रेटर नोएडा प्राधिकरण को निर्देश दिये/सिफारिश की कि जेपी कम्पनी मजदूरों की नौकरी बहाल करे, काम किये दिनों की बकाया तनखा दी जाये, और अवैधानिक ढँग से काम देने से इनकार वाले दिनों का भी पूरा वेतन दिया जाये।

आयोग एक संवैधानिक सँस्था.... साहब हिले और 5.7.05 को ग्रेटर नोएडा प्राधिकरण, जिलाधीश, जेपी कम्पनी तथा यूनियन की मीटिंग हुई। लेकिन फिर 12, 18, 22 व 26 जुलाई की ऐसी मीटिंगों में कम्पनी शामिल नहीं हुई। इनकार से बात नहीं बनती देख 12. 9.05 की मीटिंग में जेपी कम्पनी उपस्थित हुई – कोई समाधान नहीं..... कम्पनी ने यूनियन को द्विपक्षीय बातचीत के लिये न्यौता दिया। 13 सितम्बर को द्विपक्षीय चर्चा में कम्पनी ने शर्तों के साथ 52 मजदूरों की बहाली का प्रस्ताव रखा, यूनियन ने फैसले के लिये समय माँगा।

15 सितम्बर 05 को गोल्फ कोर्स गेट पर यूनियन ने मीटिंग की। कम्पनी के प्रस्ताव को ठुकरा दिया गया। गोल्फ कोर्स के थोड़ा- सा अन्दर गये यूनियन नेताओं और कम्पनी सेक्युरिटी इन्चार्ज के बीच झड़प हुई जो कि सेक्युरिटी गार्डों और मजदूरों के बीच झगड़े में बदल गई। कई लोग घायल हुये और एक गार्ड मारा गया।

गिरफ्तार किये गये 5 गार्डों को फौरन जमानत पर छोड़ दिया गया। मजदूर- पक्ष से गिरफ्तार 16 लोग दो महीने बाद भी जेल में – जमानत नहीं।

घटना की रचना करने में जेपी कम्पनी सफल रही। यूनियन नेताओं के जरिये घटना में मजदूरों को भागीदार बनाने में कम्पनी कामयाब हुई। और, ग्रेटर नोएडा गोल्फ कोर्स के मजदूर सरकारी दमन- तन्त्र का शिकार बन गये हैं। नौकरी की बहाली व बकाया तनखाओं का स्थान जमानत के लिये भागदौड़ ने ले लिया है..... पैसों का अभाव और संगीन धाराओं के तहत अदालतों में मुकदमे मजदूरों के सिर पर हैं, बरसों रहेंगे। *(जानकारियाँ हम ने पी.यू.डी. आर. की नवम्बर 05 में जारी रिपोर्ट "बिट्वीन दा कम्पनी एण्ड दा राज" से ली हैं।)*

दिल्ली के संग अमरीका में मजदूरों के गत्ते.....(पेज एक का शेष)

मजदूर चार- चार घण्टे सी- 109 के सामने बैठे – साहबों ने ऐसा दिखावा करना जारी रखा कि उन पर कोई असर नहीं पड़ता।

– 25 नवम्बर को सुबह 11 बजे से गत्ते थामे माइकल आराम एक्सपोर्ट के मजदूर सुजान सिंह पार्क स्थित कम्पनी के पंजीकृत कार्यालय के बाहर मुख्य सड़क के किनारे खान मार्केट से एम्बेसडर होटल तक खड़े हुये। बड़े साहबों के इस क्षेत्र में पुलिस की भरमार रहती है और गत्ते लिये मजदूरों के वहाँ खड़े होने की पूर्व- सूचना के कारण अतिरिक्त पुलिस भी लगाई गई थी। वैसे सरकार के सर्वोच्च न्यायालय ने आदेश दे रखा है कि रिहाइशी क्षेत्रों में व्यवसायिक कार्य नहीं होंगे पर बड़े साहबों के इस रिहाइशी क्षेत्र में यह खुलेआम होते हैं।

रईसों के क्षेत्र में एक- दूसरे से दस- दस कदम की दूरी पर घण्टों से गत्ते थामे मजदूर खड़े थे। बड़े साहबों की कारें दौड़ रही थी, पुलिस गश्त कर रही थी। ड्राइवर, होटल कर्मचारी, नौकर- चाकर और साइकिलों पर गुजरते इक्के- दुक्के लोग ही गत्ते थामे मजदूरों के पास खड़े होते थे। कोई- कोई कार भी धीमी हो जाती थी। करीब ढाई बजे अचानक एक महिला सुजान सिंह पार्क की कोठियों की तरफ से आई और जोर- जोर से अपशब्द कहते हुये मजदूरों से गत्ते छीन कर फेंकने- फड़वाने शुरू किये। इन मजदूरों के जीवन का अध्ययन करते- करते इनका अन्श बना अमरीका से आया एक पी एच. डी. छात्र तस्वीरें खींचने लगा। इस पर उक्त महिला उस छात्र पर पिल पड़ी – कैमरा छीनने की कोशिश के संग भद्दी गालियाँ देने लगी।

मजदूरों को गालियाँ देती और माइकल आराम की बड़ाई करती महिला की हरकतों को अन्य लोगों के संग पुलिस भी अवाक- सी खड़ी देखती रही। "महिला उत्पीड़न" के नाम पर मजदूरों व छात्र को पीटने के महिला के आदेशों पर कोई हिला नहीं तब उस महिला ने मोबाइल से फोन कर अतिरिक्त पुलिस बुला ली। उसी समय माइकल आराम ग्रुप की ओखला फैक्ट्री के अधिकारी सुजान सिंह पार्क कोठियों की तरफ से अचानक निकले और पुलिस के सम्मुख मजदूरों व छात्र की बुराई करने लगे।

हालात ऐसे बने थे कि महिला के आदेशों की अनदेखी कर पुलिस ने मजदूरों को सामान्य तौर पर जाने को कहा – यूँ भी गत्ते ले कर वहाँ खड़े होने का समय 11 से 3 बजे तक का था।

भड़काने की कोशिशों के बावजूद पूरे वाकये के दौरान मजदूर शान्त रहे। गत्ते ले कर चुपचाप सड़क किनारे खड़े होने के प्रभाव का गहरा अहसास हुआ।

उक्त महिला ने फिर थाने में शिकायत दर्ज की। मजदूरों द्वारा नारे लगाने, जबरन कोठी में घुसने के प्रयास के आरोप। समझाने की कोशिश करती महिला के संग दुर्व्यवहार व मोबाइल छीनने के प्रयास की बातें। स्वयं को निट्स एक्सपोर्ट की सुश्री नीतू सोनी बता कर महिला ने कहा था कि माइकल आराम कार्यालय से सूचना मिलने पर वहाँ से गुजरते समय वे सुजान सिंह पार्क रुकी थी।

– 26 नवम्बर को मजदूर फिर सुजान सिंह पार्क की सड़क किनारे गत्तों के संग खड़े हुये। हँगामा करने कोई नहीं पहुँचा। वास्तव में मजदूरों के शान्त रहने और गत्तों के साथ चुपचाप सड़क किनारे खड़े होने ने उन्हें घटना में शरीक करना बहुत मुश्किल कर दिया है। घटना बनने से इनकार करते, घटना की रचना में सहभागी बनने से इनकार करते मजदूरों को झटके से दमन- तन्त्र के जरिये कुचलना आसान नहीं है।

– जगह- जगह गत्ते ले कर अन्य मजदूरों के बीच, आम लोगों के बीच खड़े होना जारी है। अमरीका में गतिविधि बढी है। कम्पनी को समाधान का अवसर दिया गया है ..... अगले कदम के तौर पर दिल्ली के संग अमरीका के शिकागो तथा न्यू यॉर्क शहरों में माइकल आराम ग्रुप के खिलाफ गत्ते ले कर लोग खड़े होंगे।

● ऊँच- नीच वाली समाज व्यवस्था के गठन के संग आरम्भ हुई मानव योनि की त्रासदी इधर मण्डी- मुद्रा के दबदबे के संग समस्त जीवों के लिये, सम्पूर्ण पृथ्वी के लिये विनाशकारी बन गई है। सामाजिक बीमारी इस कदर भयावह रूप धारण कर चुकी है कि बीमारी का हर लक्षण स्वयं बीमारी नजर आने लगा है। ऐसे में उपचार के नाम पर उन तरीकों की भरमार है जो क्षणिक राहत के आवरणों से बीमारी को ढकते हैं। जबकि, हमें राहत के वो तरीके चाहियें जो तात्कालिक समस्या से राहत लिये हों और बीमारी को उजागर कर उसके उपचार की राहें प्रदत करते हों।

-राजनीति में राजा का स्थान जैसे चेहराविहीन सरकार ने लिया वैसे ही फैक्ट्री- उत्पादन में मालिक का स्थान बिना चेहरे वाली कम्पनी ने ले लिया। इन हालात में व्यक्ति- विशेष के गुण- अवगुण अधिकाधिक गौण होते गये हैं। अस्सी- सौ वर्ष पूर्व ही ईमानदार- असली- बलिदानी प्रतिनिधित्व की सीमा "शानदार पराजय" स्पष्ट हो गई थी। आज बेईमानी पर छाती पीटना विलाप की रस्म अदा करना है।

सरलीकरण के लिये उत्पादन क्षेत्र को ही लें। कम्पनी; कम्पनी की कई उत्पादन इकाइयाँ; उत्पादन की एक शाखा में कई कम्पनियाँ; कम्पनियों में लगते- कम्पनियों से निकलते पैसों के विभिन्न स्रोत- पड़ाव; मण्डी की माँग से अधिक उत्पादन की क्षमता – उत्पादन इकाइयों द्वारा, उत्पादन की हर शाखा द्वारा सामान्य तौर पर अपनी क्षमता से कम, काफी कम उत्पादन करना; उत्पादन इकाइयों के बन्द होने- कम्पनियों के दिवालिया होने का एक सामान्य प्रक्रिया बन जाना; देश- विदेश की सीमाओं का अर्थहीन होते जाना; ..... इन हालात ने कम्पनियों के उन कदमों को जिन्हें पिछली पीढ़ी के मजदूर आक्रमण मानते थे उन्हें आज कम्पनियों की सामान्य दैनिक क्रिया बना दिया है। इस सब से बहुमुखी असन्तोष पनपा है – इसका कोई एक लक्ष्य नहीं है, कोई एक समस्या के समाधान वाली बातें नहीं रही हैं।

ऐसे माहौल से पार पाने के लिये तौर- तरीके क्या- क्या हो सकते हैं? आवश्यकता विश्व- व्यापी संगठित प्रयासों की लगती है – उन्हें मूर्त रूप कैसे दें? पुर्जेनुमा की जगह मनुष्य- रूपी जोड़ों- तालमेलों के लिये संगठनों के स्वरूप कैसे हों? सामाजिक बीमारी के इस अथवा उस लक्षण से व्यापक- स्तर पर जूझ रही प्रत्येक व्यक्ति, जूझ रहा हर समूह इन प्रश्नों से रूबरू है, इन सवालों को सामने ला रही है। माइकल आराम एक्सपोर्ट मजदूरों की दिल्ली के संग अमरीका में गमक- धमक इन सवालों को नई मुखरता के साथ सामने लाई है।■

शोषण.....(पेज दो का शेष)

12½ घण्टे काम करना पड़ता है – रविवार को 8½ घण्टे। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। पावर प्रेस का काम है – हाथ कटते रहते हैं। ई. एस.आई. 10 मजदूरों की है, पी.एफ. किसी का नहीं।"

दिल्ली फोरजिंग वरकर: " प्लॉट 111 सैक्टर- 25 स्थित फैक्ट्री में काम करते 125 मजदूरों में मात्र 6 स्थाई हैं। स्टाफ के 12 लोगों में 4 स्थाई हैं। गर्म काम है और फैक्ट्री में दो शिफ्ट हैं – जबरन ओवर टाइम पर रोकते हैं। पैसे सिंगल रेट से तो देते ही हैं, ओवर टाइम के घण्टों में भी भारी गड़बड़ी करते हैं – 50 को 20 घण्टे दिखाते हैं। महीने में 2- 4 हाजरी भी खा जाते हैं। फैक्ट्री में पीने के पानी का प्रबन्ध नहीं। नौकरी छोड़ देने पर पैसों के लिये चक्कर कटवाते हैं.... चक्कर काट रहे दो मजदूरों को सेक्युरिटी गार्ड ने कहा कि ऐसे पैसे नहीं देंगे, मैनेजिंग डायरेक्टर की गाड़ी रोक लो। अगले रोज सुबह उन दो मजदूरों ने फैक्ट्री गेट पर मैनेजिंग डायरेक्टर की गाड़ी के सामने खड़े हो कर उसे रोक लिया। सेक्युरिटी गार्ड अपनी जगह पर बैठा रहा, हिला नहीं और बोला कि इस झगड़े में नहीं पड़ेगा। उन मजदूरों को उनके पैसे तत्काल दे दिये गये।"

महीने में एक बार छापते हैं, 5000 प्रतियाँ फ्री बाँटते हैं। मजदूर समाचार में आपको कोई बात गलत लगे तो हमें अवश्य बतायें, अन्यथा भी चर्चाओं के लिए समय निकालें।

डाक पता : मजदूर लाईब्रेरी, आटोपिन झुग्गी, एन.आई.टी फरीदाबाद– 121001

बच्चे मेरे गुनाहों को माफ करें !

(यहाँ हम अजमेर के श्री रामावतार के अनुभव व विचार दे रहे हैं। यह हम ने 'स्वपथगामी' के अक्टूबर 05 अक से लिये हैं। सम्पर्क : c/o शिक्षान्तर, 21 फतेहपुरा, उदयपुर–313004)

लगभग अढाई वर्ष तक मैंने एक अनौपचारिक रात्रिपाठाशाला में बच्चों को पढ़ाने का काम किया। जो बच्चे अलग-अलग तरह के हुनर और काम-धन्धों में संलग्न थे, मैं उन्हें बताता था कि उनके माँ-बाप स्कूल नहीं जा कर पाप के भागीदार रहे हैं, इसलिए उनके सामने यह मौका है कि ऐसी भूल करके देश पर कलंक ना बनें! 'शिक्षा' के व्यापक प्रचार-प्रसार के लिए मैंने मास्टरी छोड़ कर शिक्षकों का प्रशिक्षक बन कर काम किया। लगभग साढ़े चार वर्ष तक मैंने वे सभी चीजें शिक्षकों और बच्चों पर थोपने का काम किया जिनका निर्णय हम चन्द लोग ही करते थे। आज मुझे महसूस होता है कि मैंने बच्चों पर गुनाह किए हैं। इन गुनाहों के बावजूद मैं समाज और अपने साथियों की दृष्टि में एक 'अच्छा' शिक्षक माना जाता था। मैं अपने उन पापों का खुलासा करते हुए यह दरख्वास्त करता हूँ कि बच्चे मुझे माफ कर दें :–

1. मैंने अपनी स्कूल के बच्चों के बीच कई प्रतियोगिताएँ करवाई। रात्रिशालाओं का समन्वयक बनने के बाद तो मैंने अलग-अलग स्कूलों के बीच भी प्रतियोगिताएँ करवाई। प्रतियोगिता में जीतने वाले बच्चों को श्रेष्ठ घोषित करते हुए मैं उन्हें अपने स्तर पर इनाम वितरित करता था और हारने वाले बच्चों को मेरी दुत्कार और हीन-दृष्टि का शिकार होना पड़ता था। हारने और जीतने वाले बच्चों के बीच दुश्मनी की भावना पैदा करने में मेरा बहुत योगदान रहा।

2. मैं बच्चों को अलग-अलग कक्षाओं के अतिरिक्त एक ही कक्षा के बच्चों को भी अलग-अलग वर्गों में बाँटता था। ये वर्ग मैं बच्चों के 'शैक्षिक स्तर' के आधार पर बनाता था। वर्ग-शिक्षण (ग्रुप-टीचिंग) के नाम पर बच्चों में ऊँच-नीच या भेदभाव के बीज बोना और तीसरे वर्ग के बच्चों पर 'मन्दबुद्धि' का ठप्पा लगाना मेरे अधिकार में होता था। छः सालों में मैंने सैंकड़ों बच्चों पर 'नालायक' की छाप लगाई। बच्चों की विविधताएँ मेरे लिए समस्याएँ थी, इसलिए मैं सब को एकरूप बना कर खुद की इच्छानुसार चलाने की कोशिश करता था।

3. मैंने अपने शिक्षण काल के दौरान हमेशा हिन्दी भाषा को अपनाने और अपनी स्थानीय बोली से परहेज करने पर जोर दिया। मेरी कोशिश होती थी कि बच्चे स्कूल में सिर्फ हिन्दी भाषा का ही प्रयोग करें। मारवाड़ी बोली बोलने वाले बच्चों के बजाय मेरा ध्यान उन बच्चों पर ज्यादा होता था जो हिन्दी के 'आदर्श' शब्दों को मेरे इशारे पर तुरन्त उगल सकते थे।

4. मैंने हमेशा पाठ्यपुस्तकों में दी हुई बातों पर विश्वास किया और बच्चों को भी वही मानने पर मजबूर किया। उदाहरण के लिए जानवर चराने वाले और गोबर उठाने वाले बच्चों को मैंने 'अच्छे' साबुन से नहाने के लिए प्रोत्साहित किया जबकि उनके और अब मेरे भी अनुभव यह बताते हैं कि गोबर त्वचा के लिए बहुत फायदेमन्द है (आजकल कई लोग गोबर-युक्त एवं गोमूत्र-युक्त साबुन भी बना रहे हैं)। मैंने इन स्कूली बच्चों के छोटे भाई-बहनों को पोलियो की दवा पिलाने और टीके लगवाने के लिए भी दबाव बनाया क्योंकि टीकाकरण हमारे अनौपचारिक पाठ्यक्रम का हिस्सा था। जबकि लोगों (जिनमें से कई लोग मेरे मित्र हैं) ने अपने अनुभवों से यह साबित किया है कि टीकाकरण और पोलियो की दवा बच्चे को किसी भी बीमारी से बचाती नहीं, बल्कि उन पर घातक दुष्प्रभाव छोड़ती है। इस प्रकार मैंने बच्चों को अपने स्वास्थ्य के लिए डॉक्टरों पर निर्भर बनाने के साथ-साथ उनके स्वास्थ्य को खतरे में डालने का काम किया।

5. बच्चों को लोकतान्त्रिक व्यवस्था के बारे में जानकारियाँ देने के लिए हम ने बालसंसद (बच्चों की संसद) का गठन किया, उनके चुनाव करवाए, ताकि आगे जा कर वे भी वर्तमान राजनेताओं का अनुकरण कर सकें और इस व्यवस्था को पोषित कर सकें। इस संसद का मकसद था कि बच्चों के हाथ में 'पॉवर' दिया जाए ताकि सभी रात्रिशालाओं को वे अपनी इच्छानुसार चला सकें। लेकिन इन बालसंसदों के साथ उनके सचिव भी नियुक्त किए जाते थे (मैं शिक्षा मंत्री का सचिव हुआ करता था!), जो बच्चों को 'कठपुतली' की तरह चला सकें और उन पर अपनी इच्छाओं को थोप सकें। मैंने 'शिक्षा विभाग' को हम बड़ों द्वारा निर्धारित ढाँचे के अनुरूप ही चलाया, जिसमें 'नाम' के लिए बाल शिक्षा मंत्री की सहमति ले लिया करता था। मैंने बच्चों को अपनी असली क्षमता पहचानने में मदद करने के बजाय उन्हें तथाकथित आर्थिक एवं राजनीतिक पॉवर का लालच दिखाया।

अपने इन गुनाहों को मैं विनम्रतापूर्वक कबूल करता हूँ ताकि इन पापों का प्रायश्चित हो सके। ये स्वीकारोक्तियाँ मेरे लिए आत्मविश्लेषण की प्रक्रिया हैं जिसके माध्यम से मैं यह समझने की कोशिश कर रहा हूँ कि बच्चों के साथ किए गए मेरे कामों से उनके जीवन पर क्या असर पड़ा है। अब मैं सिखाने (थोपने) की मानसिकता से मुक्त हो कर खुद सीखने का निरन्तर प्रयास कर रहा हूँ, जो मैं अपने शिक्षकीय जीवन में कभी नहीं कर पाया। यह प्रक्रिया शायद उन बच्चों को भी भ्रम से निकलने में मदद कर सकेगी जो मेरे द्वारा थोपी हुई चीजों को चुपचाप मानते हुए अपनी असली क्षमताओं को नहीं खोज पाए। मैं स्वीकार करता हूँ कि किसी असफलता के लिए बच्चों को जिम्मेदार ठहराना बिल्कुल गलत है, बल्कि शिक्षक होने के नाते मैं खुद उन तमाम मिथ्या-आरोपों का जिम्मेदार हूँ।.....

ग्रेटर नोएडा में सरकार

घटना ने फिर घायल किये मजदूर

रईसों को आकर्षित कर जमीनों के भाव बढाने के लिये ग्रेटर नोएडा प्राधिकरण ने क्षेत्र में एक विशाल गोल्फ कोर्स बनाने का निर्णय लिया। पट्टेदार के लिये 182 एकड़ में गोल्फ कोर्स के साथ 40 एकड़ जमीन टैनिस एकेडमी, होटल तथा क्लब के लिये। इसके अतिरिक्त 215 एकड़ का प्रावधान। फरवरी 95 में चेन्नै मुख्यालय वाली स्टर्लिंग कम्पनी ने 23 करोड 76 लाख रुपये किस्तों में देने तथा 59 लाख 40 हजार रुपये सालाना के एवज में गोल्फ कोर्स का 99 वर्ष का पट्टा लिया।

1½ से 4 ½ लाख रुपये में 347 व्यक्तियों व कम्पनियों को शीघ्र ही गोल्फ कोर्स की सदस्यता बेच दी गई। निर्माण व रखरखाव के लिये भर्ती 164 मजदूरों में 96 को स्थाई कर दिया गया। फिर आर्थिक मन्दी का शिकार हुई स्टर्लिंग कम्पनी प्राधिकरण को भुगतान करने में असफल होने लगी। इस पर 1999 में गोल्फ कोर्स के लिये संयुक्त मैनेजमेन्ट का गठन किया गया और फिर वित्त संस्था आई सी आई सी आई नये पट्टेदार के रूप में जेपी ग्रुप को लाई। जेपी कम्पनी को अतिरिक्त 215 एकड जमीन भी पट्टे पर दी गई जिसमें 554 करोड़ रुपये कीमत की 42 एकड़ व्यवसायिक जमीन को तो नये पट्टेदार को उपहार कहा जा सकता है।

2400 रुपये महीना तनखा में काम करते 164 मजदूरों को पहले पट्टेदार व फिर संयुक्त मैनेजमेन्ट ने 1फरवरी से 23 अप्रैल 2000 के दौरान की तनखायें नहीं दी। 24 अप्रैल को पट्टा रद्द करने और 8 जून को नये पट्टेदार को देने के दौरान का वेतन प्राधिकरण ने मजदूरों को नहीं दिया। फिर जेपी कम्पनी ने तनखायें देने की बजाय हिसाब की बातें की और यूनियन ने कम्पनी का साथ दिया – 7 यूनियन नेताओं के संग 21 अन्य मजदूरों के इस्तीफे। लेकिन बाकी मजदूरों ने नौकरी छोड़ने से इनकार कर दिया।

नये यूनियन नेताओं के नेतृत्व में कार्रवाई आरम्भ हुई। गोल्फ कोर्स गेट पर 12 अगस्त से धरना, अदालत द्वारा 17 अगस्त को 500 मीटर दूर का आदेश, 17 अगस्त की रात पुलिस की लाठियों द्वारा धरना समाप्त।

यूनियन द्वारा सितम्बर में बकाया वेतन के लिये श्रम विभाग में आवेदन। यह नहीं वह पट्टेदार का झमेला, राशि पर विवाद, देनदार का उपस्थित ही नहीं होना, दस्तावेज प्रस्तुत ही नहीं करना। जुलाई 2001 में डी एल सी ने स्टर्लिंग कम्पनी से पैसे वसूलने के लिये चेन्नै के जिलाधीश को पत्र भेजा – चार वर्ष बाद भी कोई उत्तर नहीं। हाँ, पहले-दूसरे पट्टेदार के बीच के 25 अप्रैल से 7 जून के पैसे प्राधिकरण ने जनवरी 01 में जा कर दिये। (बाकी पेज दो पर)

नई पट्टेदार जेपी कम्पनी द्वारा नौकरी से

स्वामी, प्रकाशक एवं सम्पादक शेर सिंह के लिए जे० के० आफसैट दिल्ली से मुद्रित किया। RN 42233 पोस्टल रजिस्ट्रेशन L/HR/FBD/73
सौरभ लेजर टाइपसैटर्स, बी–546 नेहरु ग्राउंड, फरीदाबाद द्वारा टाइपसैट।